B.Ed. IInd Year

Subject :- Knowledge, Language & Curriculum

V. Imp

Topic :- सरन पाठ्यक्रम प्रतिमान

सन् 1976 में वाई० सरन ने जिस पाठ्यक्रम प्रतिमान को विकसित किया, उसे सरन पाठ्यक्रम प्रतिमान कहा जाता है। इसका विकास प्रणाली विश्लेषण के माध्यम से हुआ और तकनीकी के प्रमुख पक्षों को आधार माना गया। इसमें विशिष्ट उद्देश्यों की प्राथमिकता दी जाती है। अदा (Input), प्रदा (Output) और प्रक्रिया (Process) पक्षों का विश्लेषण करके इसका विकास एवं सुधार किया जाता है। इसकी प्रमुख अवधारणाएँ हैं—

⇒ कोई पाठ्यक्रम अपने में पूर्ण नहीं है, इसमें सुधार एवं विकास की आवश्यकता होती है।

⇒ कोई नया पाठ्यक्रम भी पूर्ण नहीं हो सकता अपितु प्रचलित पाठ्यक्रम की कठिनाइयों का निदान करके उसमें सुधार करने से पाठ्यक्रम का सुधार प्रणाली विश्लेषण से करना अधिक व्यवहारिक रहता है।

सरन प्रतिमान के तीन पक्ष होते हैं

1. अदा (Input)
2. प्रदा (Output)
3. प्रक्रिया (Process)

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रदा पक्ष को तीन घटकों में बांटा गया है।

1. पाठ्यवस्तु के स्रोत, आवश्यकता तथा विशेषज्ञों की विचारधारा।
2. उद्देश्यों का प्रतिपादन करना और पाठ्यवस्तु का चयन करना।
3. पाठ्यक्रम का प्रारूप विकसित करना।

इस प्रतिपादन में प्रदा पक्ष को प्राथमिकता दी जाती है। प्रदा पक्ष पाठ्यक्रम सीखने के अनुभवों की व्यवस्था का स्वरूप प्रस्तुत करता है, जिससे अपेक्षित उद्देश्य प्राप्त किये जाते हैं। इसके अन्तर्गत कई कारक होते हैं, लेकिन मूल्यांकन प्रमुख कारक होता है।

मूल्यांकन प्रक्रिया उद्देश्य केन्द्रित होती है। इसके दो प्रमुख कार्य हैं —

(i) यह निर्णय लिया जाना कि उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है अथवा नहीं।

(ii) यह देखना कि यदि उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हुई है तो इसके क्या कारण रहे हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया निदानात्मक होती है। इसमें प्रणाली विश्लेषण को प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम के सुधार के लिए दिशा प्राप्त हो जाती है।

P.T.O.

इस प्रतिमान मे अदा प्रदा और प्रक्रिया के सम्पादन के लिए निम्नलिखित सोपानो का अनुसरण किया जाता है –

⇒ आवश्यकता के मूल्यांकन हेतु सर्वेक्षण ।

⇒ भावी आवश्यकताओ हेतु मूल्यांकन ।

⇒ उद्देश्यो को पहचानना ।

⇒ उद्देश्यो को व्यवहारिक रूप मे लिखना ।

⇒ पाठ्यवस्तु का चयन ।

⇒ मूल्यांकन प्रणाली का प्रारूप ।

⇒ स्रोतो का विकास ।

⇒ जाँच करना ।

⇒ समीक्षा करना ।

इस सोपानो के अन्तर्गत इस प्रतिमान मे पाठ्यक्रम का विकास किया जाता है। यह प्रतिमान अधिक व्यवहारिक है क्योकि इसमे अनुभवो और जाँच के आधार पर अन्तिम प्रारूप तैयार किया जाता है। यद्यपि इसमे अधिक समय लगता है, इसलिए यह मितव्ययी नही है, तथापि इसका प्रारूप अधिक व्यापक है।

Thankyou

by
Mr. Parveen Raj
Assis. Pro.
B.R.C. Deoband (SRE)

Scanned with CamScanner